राष्ट्रीय

स्वयंसेवक

संघ

एक स्वयंसंपूर्ण कार्य

श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी

प्रकाशक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
२६, विधान सरणी
कलकत्ता-७००००६

मूल्य : चालीस पैसे।

मुद्रक
पपुलार आर्ट प्रिन्टर्स
१, मुक्ताराम बाबू सेकेन्ड लेन
कलकत्ता-७

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

एक स्वयंसम्पूर्ण कार्य

मेरे लिए यह बहुत ही आनन्द की बात है कि आज आप सब लोगों के बीच में मैं अपने को पा रहा हूँ। इसमें बहुत से लोग बहुत पुराने परिचित हैं; कुछ नये भी हैं। और जिस विषय पर बोलना है वह भी बड़ा प्राचीन है। १९२५ से चलता आया हुआ जो विषय है उसी के सम्बन्ध में बोलना है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ—इसका ध्येय क्या है, इसके विषय में नए सिरे से कुछ बोलने की आवश्यकता है यह मैं नहीं समझता। यहाँ आए हुए सभी लोग संघ के ध्येय को अच्छी तरह से जानते हैं। अपनी प्रार्थना में जो कहा गया है 'परम् वैभवम् नेतुमेतत्स्वराष्ट्रं' इस राष्ट्र को परम वैभव की ओर ले जाना, यह अपना ध्येय है। इस ध्येयसिद्धि की Precondition, शर्त इस नाते कहा गया, 'विधायास्य धर्मस्य संरक्षणम्'। धर्म की रक्षा हो और धर्म की रक्षा के लिए आधार कहा गया--'विजेत्री च नः संहता कार्यशक्तिः', अपनी जो संगठित विजयशालिनी कार्यशक्ति है; मानो सम्पूर्ण समाज का संगठन; यह इसका आधार है। इस आधार पर धर्म की रक्षा होगी जिसके फलस्वरूप राष्ट्र को परम् वैभव प्राप्त होगा। यह रचना बहुत समय से अपने सामने है। अतः इस विषय में विशेष विवरण देने की आवश्यकता नहीं समझता।

एक स्पष्ट ध्येय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने सामने रखा है। किन्तु संघ की यह विशेषता है कि केवल ध्येय सामने रख कर

ही वह सन्तुष्ट नहीं; तो उस ध्येय की ओर जाने वाला रास्ता भी संघ ने दिखाया है। कार्य-पद्धति भी उसी तरह की निर्माण की है। जिस कार्य पद्धति के विषय में हम ऐसा कह सकते हैं, अपने ५२ साल के अनुभव के आधार पर, कि सम्पूर्ण हिन्दू समाज को संगठित करने की दृष्टि से एकमात्र उपयुक्त प्रभावी कार्य पद्धति कोई होगी तो रा० स्व० संघ की ही कार्य पद्धति है। कोई दूसरी कार्य पद्धति नहीं।

यह ठीक है कि देश में तरह तरह की संस्थाएं चलती हैं और शायद ही कोई ऐसी संस्था होगी जिसकी कार्य पद्धति इतनी रूखी इतनी कठिन हो, इतनी धीरजवाली हो, जितनी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की है। इसमें बहुत धीरज लगता है, लगातार काम करना पड़ता है। कोई 'रोमान्टिक' बात इसमें नहीं है। काम ही करना है और कुछ नहीं। तरह तरह के सुझाव भी बीच बीच में आते रहते हैं कि जरा कार्यक्रमों को आकर्षक बनाना चाहिए; यह करना चाहिए, वह करना चाहिए, किन्तु मालुम होती है, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेता लोग कुछ 'रोमान्टिक' नहीं हैं। इस कारण ऐसे आकर्षक सुझावों को वे स्वीकार नहीं करते। अभी तक नहीं किया और मैं समझता हूं कि इसके आगे भी वह होने वाला नहीं। किन्तु इस कार्य पद्धति के विषय में यह हमारा निष्कर्ष है कि यही ऐकमात्र रास्ता है, जो हमें अपने ध्येय की ओर पहुंचाएगा।

इस दृष्टि से संघ की कार्य पद्धति स्वयंपूर्ण है। स्वयंपूर्ण है इसका अर्थ क्या? स्वयंपर्ण है इसके दोनो अर्थ हैं। यदि हम इस कार्य पद्धति को लेकर काम करते हैं तो संघ का ध्येय सिद्ध करने के लिए, दूसरी किसी भी पूरक कार्य पद्धति (Supplementary technique) की

आवश्यकता नहीं, और किसी भी कारण यदि हम इस कार्यपद्धति को छोड़ देते हैं तो दूसरी कोई (Substitute, alternative) वैकल्पिक कार्यपद्धति technique ऐसा नहीं हो सकता, जो हमें वहाँ पहुँचायेगा जहाँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हमें पहुँचाना चाहता है। दोनों अर्थों में, याने इसको लेकर चलते हैं तो फिर (Supplementary कार्य पद्धति की आवश्यकता नहीं और इसको छोड़कर चलते हैं तो फिर कोई alternative, Substitute) कार्यपद्धति हो नहीं सकती जो हमारा ध्येय सिद्ध कर सकती हो। दोनों ही अर्थों में हमने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्यपद्धति स्वयंपूर्ण है।

अब अलग अलग कार्य पद्धतियों को देखकर लोगों के मन में मोह होना स्वाभाविक है कि भाई, इतना लम्बा रास्ता किस लिए लिया है, जरा shortcut ले लेते। ऐसा लगना स्वाभाविक है और हम shortcut नहीं ले सकते ऐसी बात नहीं; लेकिन shortcut से ध्येय -सिद्ध नहीं होगा। हमने यदि यह सोचा है कि ऐसी बिल्डिंग बनानी है जो मैसूर के महाराजा के पैलेस के जैसी हो, तो हमें करोड़ों रुपये लगाने होंगे, सालों तक काम करना पड़ेगा। हजारों मजदूर और कारीगरों को काम पर लगाना पड़ेगा और आप यदि कहेंगे कि हम करोड़ों रुपये खर्च करने के लिए तैयार नहीं, हजारों मजदूरों को काम पर लगाने के लिए तैयार नहीं; हमें तो दो मिनट में बंगला बना दो, तो दो मिनट में बंगला बन नहीं सकता ऐसा नहीं। दो मिनट में भी बंगला बन सकता है। उदाहरणार्थ एक लड़के को market में भेज दो, तास मंगवा लो —दो तीन रुपये में तास आ जायेगी। दो मिनट में तास का

बंगला खड़ा हो जायेगा। आपको कम खर्च में काम करना है, तो वह हो सकता है लेकिन इतना ही है दो रुपये में और दो मिनट में मैसूर के महाराजा का palace नहीं खड़ा होगा। तास का बंगला खड़ा होगा। और जैसे ही हवा का झकोरा आयेगा तो वह बंगला उड़ जायेगा, वह मजबूत नहीं रहेगा जैसे मैसूर के महाराजा का पैलेस। आप दोनों बातें इकट्ठा नहीं चाह सकते। पैलेस होना चाहिए लेकिन दो रुपये में होना चाहिए ऐसा नहीं हो सकता हरेक बात की अपनी कीमत है वह कीमत चुकानी ही पड़ेगी।

कोई कहेगा कि यह ट्रेन है: बड़ा ज्यादा समय लेती है। हमें थोड़ा समय लेने वाली ट्रेन में बैठा दो तो बैठाया जा सकता है लेकिन फिर आप गन्तव्य स्थान पर नहीं पहुँचेंगे। ऐसे बीच में किसी छोटे स्टेशन पर आपका प्रवास समाप्त हो जायेगा। गन्तव्य स्थान पर पहुंचना है तो यही ट्रेन लेनी पड़ेगी। shortcut की चाह यह हर समय अच्छी नहीं होती। मुगलसराय का रेलवे यार्ड बड़ा प्रसिद्ध है। इस रेलवे यार्ड में हमेशा शंटिंग चलते रहता है। ब्रिज भी है किन्तु तो भी लोग short cut ढूंढ़ते हैं। ब्रिज पर से जाना, ऊपर चढ़ना होगा, नीचे उतरना पड़ेगा, समय जायेगा, पैरों को तकलीफ होगी, तो सीधे रेलवे लाईन cross करना चाहते हैं। तो इसके कारण एक्सीडेण्ट होंगे क्योंकि शंटिंग हमेशा चलता रहता है। रेलवे ने एक साईन बोर्ड भी वहाँ लगाया है जिसपर लिखा है 'Beware short cut will cut you short' बड़े काम के लिए कोई short cut नहीं हो सकता। तो जो संघ की कार्य पद्धति है, वही हमें —'एषः पन्था, नान्यः पन्था विद्यते अयनाय' यह जो

प्राचीन वाक्य है उसके अनुसार यह कार्य-पद्धति ही हमें ध्येय तक पहुंचाएगी। इस श्रद्धा के साथ काम करना है।

यह स्वयंपूर्ण कार्य-पद्धति है। किसी पूरक कार्य पद्धति की आवश्यकता नही। दूसरी substitute कार्य पद्धति हो नहीं सकतीं यह श्रद्धा लेकर हम काम कर रहे हैं। आगे भी काम करना है अब इस कार्य पद्धति की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं। दिन प्रतिदिन एकत्रीकरण यह तो केन्द्र बिन्दु है और बार-बार एकत्रित आना चाहे शिविर के रूप में हो, कहीं ट्रिप के लिए जाना हो ऐसे कार्यक्रम इसकी विशेषता है।

और जो संघ का कार्य बढ़ रहा है, उसके बढ़ने का भी अपना एक अनोखा तरीका है, और वह तरीका है सम्पर्क। व्यक्तिगत संपर्क Publicity नहीं। आजकल यह जो सस्ता रास्ता निकला है कि न्यूज पेपर में publicity कर दो, उससे सब कुछ हो जाएगा। आजकल जो लोग संघ को दोष देते हैं;—संघ के समर्थक भी; कि लम्बा रास्ता क्यों निकाला है। इनके पास अभी दिमाग नहीं है, कल्पना शक्ति इनकी जाग्रत नहीं है, न्यूज पेपर का उपयोग करो, रेडियो का उपयोग करो, T.V. का उपयोग करो, प्रचार धुंआधार चलने दो; इससे सब कुछ हो जायेगा। इसके लिए हर दिन शाखा पर आना निकर पहनना, जाड़े के दिनों में blanket छोड़कर बाहर आना इसकी जरूरत क्या है? अखबार, T.V., रेडियो से सारा राष्ट्र का काम हो जायेगा, ऐसा लोग समझते हैं। प्रचार का एक अपना उपयोग है ही नहीं है, ऐसा नहीं है। लेकिन प्रचार का उपयोग क्या है? मत परिवर्तन। बौद्धिक स्तर पर मत परिवर्तन इतना ही उसका

परिणाम है। हृदय में परिवर्तन, मन में परिवर्तन, आत्मा में परिवर्तन, यह प्रचार से नहीं हो सकता। मान लीजिए हमने ब्रह्मचारी क्लब शुरु किया और उसका ध्येय इतना ही रखा कि हिन्दुस्थान के सब लोगों को यह बात जचाना है कि ब्रह्मचर्य का पालन अच्छा है, ब्रह्मचर्य को छोड़ना खराब बात है। बौद्धिक स्तर पर लोगों का मत परिवर्तन करना, इतनाही हमने उद्देश्य रखा तो हम ब्रह्मचर्य के पक्ष में धूंआधार प्रचार कर सकते हैं। न्यूजपेपर में, रेडियो में, T.V. पर जनता का मत परिवर्तन हो सकता है और कल यदि referendum (जनमत संग्रह) हुआ तो ब्रह्मचर्य के पक्ष में जो हैं उन्हें vast majority, overwhelming majority मिल सकती है। मत परिवर्तन तो हो सकता है, लेकिन यदि कोई कहेगा कि इस धूँआधार प्रचार के फलस्वरूप देश में ब्रह्मचर्य का पालन करनेवालों की संख्या बढ़ेगी तो यह भ्रम है, भ्रान्ति है। ब्रह्मचर्य पालन करने वाले लोगों की संख्या प्रचार से नहीं बढ़ेगी। ब्रह्मचर्य अच्छा है, ऐसा वोट करने वालों की संख्या बढ़ सकती है। ब्रह्मचर्य पालन करनेवालों की संख्या प्रचार करने के कारण नहीं बढ़ सकती। उसके लिए कुछ और माध्यम है। तो वोटर बनाना एक अलग बात है, स्वयंसेवक बनाना अलग बात है। वोटर और स्वयंसेवक में अन्तर क्या है, समझ लेना चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन करना अच्छा है, ऐसा जो वोट देता है बैलट बाक्स में, वह वोटर है और जो स्वयं ब्रह्मचर्य का पालन कर रहा है वह स्वयंसेवक है। ऐसा यदि उदाहरण देकर बताना हो तो यह कहा जा सकता है कि केवल मत परिवर्तन कि सच बोलना चाहिए, अच्छा व्यवहार करना चाहिए, सम्पूर्ण विश्व

को अपना मानना चाहिए ऐसा जिसका मत है वह वोटर। परन्तु ऐसा जिसका व्यवहार है और उसके लिए आत्म बलिदान करने के लिये तैयार है, वह स्वयंसेवक। मत और साक्षात्कार, वोट और realisation इसमें बड़ा अन्तर है और यह केवल प्रचार के द्वारा होने वाला काम नहीं। इसके लिए दिन प्रतिदिन हृदय में संस्कार अंकित करने की आवश्यकता है। जिस वायुमण्डल में यह संस्कार अंकित होते हैं, उस वायुमण्डल में हर एक को एक घण्टा रहने की आवश्यकता है। स्वयं रहने की आवश्यकता है, लोगों को उस वायुमण्डल में ले जाने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से अपने विस्तार का माध्यम रा० स्व० संघ ने प्रचार नहीं माना। अर्थात्, T.V. और रेडियो नहीं माना तो 'man to man contact, heart to heart talk' एक एक आदमी के साथ सम्पर्क, एक एक आदमी के साथ हृदय से बातचीत, यह माध्यम रा० स्व० संघ ने माना है। सम्पर्क हमारे विस्तार का माध्यम है। अपने एक संघ-गीत में कहा गया 'सम्पर्क अमृत को पिलाकर'; तो हमारे विस्तार का माध्यम है सम्पर्क। सम्पर्क जितना हम अधिक करेंगे, और अच्छा करेंगे, उतना हमारा विस्तार अधिक होगा, अच्छा होगा। इसके लिए भी जो हमारे स्वयंसेवक हैं उनके मन में, उनकी दृष्टि में—रा० स्व० संघ आने की आवश्यकता है। संघ के संस्कार हृदय में अंकित होने की आवश्यकता है ही—लेकिन यह होने के बाद भी स्वयंसेवक की दृष्टि में यदि संघ न रहा तो अपने २४ घन्टे का उपयोग वह संघ के लिए नहीं कर सकता।

हमारा माध्यम सम्पर्क है। अब सम्पर्क अलग अलग लोगों

से आता है। जो विद्यार्थी हैं, उनका स्कूल-कालेज में प्रोफेसर और विद्यार्थियों से सम्पर्क आता है' दूकानदारों का अपने ग्राहकों से सम्पर्क आता है, वकीलों का अपने clients से सम्पर्क आता है, डाक्टरों का अपने patients के साथ सम्पर्क आता है। फैक्टरी मजदूरों का अपने बाकी मजदूरों के साथ और मैनेजमेन्ट के साथ सम्पर्क आता है। ~~मान्ने~~ जिसका जो जीविकोपार्जन का साधन ~~होगा~~, मुख्य काम ~~होगा~~, उससे सम्बन्धित सम्पर्क आता है। अब ~~सारा~~ सम्पर्क ~~अब~~ जीवन में है वह संघ के लिए उपयोग में लाना है यह हम ख्याल में रखें। जो कुछ भी काम होता है वह उपयुक्त (purposeful) सम्पर्क के माध्यम से होता है। इसलिए हर एक काम का उपयोग संघ के लिए करना, यह रा० स्व० संघ की पुरानी पद्धति है। प० पू० डाक्टरजी के जीवन में क्या हमने पढ़ा नहीं कि संघ की स्थापना के पश्चात भी डाक्टरजी ने कई बातों में हिस्सा लिया। भागानगर सत्याग्रह में अपने स्वयंसेवकों को भेजा व्यक्तिगत हैसियत में; और भी कई आन्दोलनों में हिस्सा लिया; भागलपुर के हिन्दु महासभा के अधिवेशन के समय जो सत्याग्रह हुआ उसमें हिस्सा लिया। ~~अब~~ यह जो सारा हुआ तो कांग्रेस का क्या होगा, हिन्दु सभा का क्या होगा, यह बात ~~हमारे~~ कार्यकर्ताओं के सामने नहीं थी। ~~भाग्~~नगर के समय अपने भैयाजी दाणी प्रमुख थे; भागलपुर के समय बाबा साहेब घटाटे थे। स्वयं डाक्टर जी यवतमाल के जंगल सत्याग्रह में जेल गए थे। अकोला जेल में थे। लेकिन हम सब लोगों ने उनका जीवन पढ़ा है ~~हम जानते हैं कि हरेक का उपयोग~~, जहाँ हम जाएँगे, जेल में रहेंगे

में अच्छे अच्छे स्वार्थत्यागी लोगों के साथ सम्पर्क आएगा। कार्यों के माध्यम से हम उनको संघ की ओर मोड़ सकेंगे और बाहर आने के बाद जहाँ जहाँ वे लोग फैले हैं वहाँ जाकर शाखाएँ शुरु कर सकेंगे यह हिसाब-किताब मन में रखते हुए ही की यात्रा हुई और अलग अलग आन्दोलनों मे हिस्सा लिया गया। ~~यह सब हम जानते हैं।~~ मैं कालेज में था तो मुझे पता है कि लोगों को कालेज की बाकी गतिविधियों में खास रुचि (interest) नहीं थी, लेकिन सम्पर्क बढ़ाने के लिए तरह तरह की गतिविधियों में हम हिस्सा लेते थे। अपने जो प्राचीन प्रचारक हैं, डाक्टर जी के समय के, कृष्णराव मोहरिल ~~उनका नाम है, आप लोगों में से कई लोगों ने उनको देखा है।~~ ~~कृष्णराव मोहरिल को~~ कालेज की किसी गतिविधि में रुचि नहीं थी। सारी रुचि उनकी संघ में ही थी। इसीलिए उन्होंने किसी भी वर्ग में पास होने की जल्दबाजी नहीं की। पूरे धीरज के साथ एक एक कक्षा में वे रहे, बाकी कालेज में क्या चलता है, क्या नहीं, कभी उन्होंने देखा भी नहीं। लेकिन एक बार अपने स्वयंसेवकों ने सोचा कि भई, ज्यादा लोगों के साथ और प्रिन्सिपल-प्रोफेसर के साथ यदि सम्पर्क लाना है तो यह जो ~~Social gathering~~ होता है, उसका चुनाव लड़ना चाहिए, जनरल सेक्रेटरी इनको चुनकर लाना चाहिए; फिर उस capacity से प्रिन्सिपल वगैरह के साथ सम्पर्क आएगा तो उन पर प्रभाव जमाया जा सकता है। ये खड़े हो गए, ~~चुन कर आ गए।~~ अच्छा काम किया। अब उन्होंने कभी social gathering में attend ही नहीं किया था। ~~लेकिन काहे के लिए यह? एक तो~~

सम्पर्क का माध्यम इस नाते हर चीज की ओर देखा गया।

अब हम २४ घन्टे कुछ न कुछ करते रहते हैं कि नहीं? खासकर जीविकोपार्जन के लिए कुछ करते हैं। Hobby के नाते हम कुछ काम करते हैं, कुछ तो हम करते ही हैं। इसमें लोगों से सम्पर्क आता है कि नहीं? आता है। लेकिन इसी सम्पर्क का उपयोग हम रा० स्व० संघ के लिए करते हैं क्या? यह सवाल है? यह हमने (compartmentalisation) मन में किया है? जैसे ईसाई लोगों के बारे में कहते हैं कि रविवार का दिन सुबह (religion) के लिए, बाकी दिन (religion) छोड़ कर बाकी धंधों के लिए। वैसा हमने सोचा है क्या कि यह एक घन्टा संघ के लिए बाकी २३ घन्टा हमारे non संघ काम के लिए। ऐसा अपने यहाँ (division) नहीं है कि एक घंटा संघ को दे दिया बाकी संघ को भूल जाना। अपने माननीय बाबा साहेब आप्टे ऐसा कहते थे कि हम एक घन्टा संघ स्थान पर आते हैं। यह जो एक घंटा है, यह इसकी परीक्षा है कि बाकी के २३ घन्टों में हमने संघ का काम कितना किया है इसका मापदण्ड यह एक घन्टा है। इस नाते बाकी के २३ घंटे हमें बिताने हैं, ऐसा माननीय बाबा साहेब आप्टे कहते थे। तो २४ घन्टा हमारा चिन्तन संघ का ही होना चाहिए। संघ 'दृष्टि' में आना चाहिए। आप कहेंगे यह 'दृष्टि में आना' समझ में नहीं आ रहा है। किन्तु समझ में आ सकता है। आप कल्पना कीजिए की रास्ते के किनारे फुटपाथ पर दो कारीगर बैठे हैं। एक कारीगर है नाई, barber। ऐसे नाई अब कलकत्ता में कम हैं लेकिन उत्तर प्रदेश में कई नाई रास्ते के किनारे

ी हैं और इंटा देकर वह अपने client को वहां इंटे पर बैठाते हैं। वहीं दाढ़ी वगैरह बना लेते हैं। इसलिए हमारे लोगों ने ऐसे को रास्ते पर बैठने वाले नाई को और जो इंट पर बैठा कर अपने client की दाढ़ी बनाते हैं उनका नाम Italian barber रखा है क्योंकि वे इंटे पर बैठाते हैं। तो ऐसे Italian barber भी रास्ते के किनारे हैं और रास्ते के किनारे मोची भी है। अब मोची भी तरह तरह के हो सकते हैं, नाई भी तरह तरह के हो सकते हैं। लेकिन आदर्श नाई कौन सा है ? रास्ते पर से सैकड़ों लोगों आना जाना करते हैं। किन्तु जो आदर्श चमार है वह आपको बोल नहीं सकेगा कि किस शक्ल का आदमी कौन सा सूट पहन कर और कौन सा शर्ट पहनकर जा रहा था। वह नहीं बोल सकेगा। वह इतना बोल सकेगा कि किस आदमी का बूट फटा हुआ था और चप्पल को दुरूस्त करने की आवश्यकता थी। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी या नहीं बढ़ी थी, उसने कंघी की थी या नहीं। वह गोरे थे या काले थे यह आदर्श चमार नहीं बता सकेगा और आदर्श नाई जो है वह आपको बता नहीं सकेगा कि सामने से जो आदमी गया है वह बाटा का जूता पहना था या फटी हुई चप्पल थी या नंगा पैर था। वह नहीं बता सकेगा। वह यह बता सकेगा कि इसको दाढ़ी बनवाने की आवश्यकता थी या नहीं, cutting की आवश्यकता थी या नहीं इसके बाल सफेद थे या काले थे, यह बता सकेगा क्योंकि जो आदर्श नाई है, उसके ख्याल में एवं उसकी दृष्टि में उसका धंधा आता है। इसलिए चमार का सारा concentration पैर पर रहता है, नाई का सारा मनोयोग सूरत शक्ल पर रहता है। जैसा इनकी

दृष्टि में इनका धंधा आता है, स्वयंसेवक की दृष्टि में स्वयंसेवकत्व और संघ आना चाहिए। हर चीज की ओर संघ दृष्टि से देखना हर चीज की ओर। और इस दृष्टि से जहाँ जहाँ हम खड़े हैं, वहाँ वहाँ सम्पर्क बढ़ाना। तो सम्पर्क यह माध्यम है, संघकार्य के विस्तार का। इस नाते हम जहाँ कहीं काम करते हों जहाँ जो जो सम्पर्क में आते हैं उनके उपयोग से, उनको उपयोग करते हुए संघ का प्रभाव आर्षकण लोगों के मन में कैसे बढ़ा सकते हैं, इसका विचार करना चाहिए। अब यह बात कुछ न कुछ मात्रा में में समझता हूँ हरेक स्वयंसेवक थोड़ी-बहुत करता ही है। जरा ज्यादा एकाग्रचित्त होकर यह करने की आवश्यकता है। consciously याने समझ बूझकर करने की आवश्यकता है। आज हम ज्यादा consciously ज्यादा समझकर नहीं कर रहे हैं तो भी अच्छे परिणाम निकल रहे हैं, ज्यादा consciously करेंगे तो इससे ज्यादा अच्छे परिणाम निकल सकते हैं। यह बात स्पष्ट है। इसी सम्पर्क माध्यम से ही और फिर कुछ आनुषंगिक फल के नाते संघ कार्य के लिए पूरक इस नाते नहीं संघ कार्य के लिए कोई पूरक कार्य की आवश्यकता नहीं संघ कार्य स्वयंपूर्ण है। लेकिन स्वाभाविक रूप से विभिन्न स्वयंसेवक हरेक क्षेत्र में सम्पर्क के लिए यदि प्रयास करते हैं तो कार्य क्षेत्र एक ही हो, स्वयंसेवक बहुत हों और सम्पर्क के लिए सबका प्रयास चल रहा हो तो स्वाभाविक रूप से उन प्रयासों में भी कुछ एकरूपता आना, कुछ co-ordination आना स्वाभाविक है। अब जैसे जैसे स्वयंसेवकों की संख्या बढ़ती गई, उनका सम्पर्क का प्रयास बढ़ता गया तो विभिन्न कार्य क्षेत्रों में

ाविक रूप से कुछ एक संगठित कार्य का भी उदय हुआ है, ...आ हुआ है, यह एक आनुषंगिक फल है। संघ कार्य के लिए पूरक ...से incidentally एक ही कार्य क्षेत्र में विभिन्न लोग ...सम्पर्क का काम करने लगे। जो अलग अलग कार्य करते थे उसी ...रह, cohesion उसमें लाया जाय co ordination ...में लाया जाय ऐसा जब देखा गया तो उसका स्वरूप संगठित ...आ सम्पर्क का। स्वयंसेवकों के द्वारा सम्पर्क का संगठित प्रयास ...या उसका स्वरूप हुआ।

आजकल जो संगठित प्रयास होते हैं; उनको जनसंगठन (mass organisation) कहा जाता है। ऐसी कुछ (mass organisation) खड़ी हुई हैं। यह ~~सतत~~ सम्पर्क का आनुषंगिक फल है। व्यक्ति...गत रूप से जहाँ संख्या कम है, सम्पर्क का प्रयास होता ही है। ...एक क्षेत्र में ज़्यादा लोग सम्पर्क कर रहे उसमें Co ordination ...लाने की स्वाभाविक इच्छा और उसके फलस्वरूप संगठित प्रयास ...होता है, उसीका एक दृश्य परिणाम (mass organisation) ...जन संगठन ऐसा दिखाई देता है। आगे, जन संगठनों में भी हमारे ...स्वयंसेवक काम कर रहे हैं विभिन्न क्षेत्रों में ~~अब यह भी~~ सम्पर्क ~~का एक~~ माध्यम है ~~इस नाते इसका~~ महत्व है और इस दृष्टि से ...यह कार्य ठीक ढंग से करने की आवश्यकता है। दोनों तरफ से ~~extreme~~ पर हम न जाएँ यह सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। ~~सब~~ जनसंगठन संघ के स्वंयसेवकों के माध्यम से ही शुरू हुआ, ...ऐसी ~~तो~~ बात नहीं। पहले से ही जनसंगठन चलते आए हैं। उनकी ...कार्य करने की पध्दति भी चलती आई है। अपने स्वयंसेवक भी

जन-संगठनों में कार्य कर रहे है; जन-संगठन चला रहे हैं। किन्तु यह सारा चलाते समय मूल बात को यदि हम भूल जायेंगे तो फिर ऐसा होगा जैसे एक छोटा बच्चा होता है, माँ की गोद में बैठा हुआ होता है। आंगन में वह देखता है कि कोई अच्छी लाल रंग की गेन्द आंगन में है। छोटा बच्चा, अच्छे bright colour पर आकृष्ट होता है। माँ को कहता है, माँ, मैं यह गेन्द लेकर आता हूं। तो माँ की गोद से उठकर, वह आंगन में जाता है। गेन्द लेता है। गेन्द हाथ में लेता है तो उसको लगता है, गेन्द से जरा खेलना चाहिए; उसके साथ वह खेलने लगता है और खेलने में वह इतना रममाण हो जाता है कि फिर से माँ के पास जाना है, यह भूल जाता है। माँ अपनी राह देख रही है, यह भूल जाता है। माँ के पास जाना यह मेरा कर्तव्य है, यह भूल जाता है, खेलने में ही रममाण हो जाता है। बच्चे के लिए तो यह बात ठीक है किन्तु हमलोगों के लिए यह बात ठीक नहीं। हमने आंगन में जाना है, गेंद को उठाना भी हैं, वह आकर्षक है यह भी समझना है तो भी उसको लेकर फिर से माँ की गोद में आकर बैठना है. ऐसा यदि न हुआ तो बच्चा और हमारे में कोई अन्तर नहीं रहेगा। तो जहाँ जन संगठनों में हम लोग काम कर रहे हैं; वहाँ एक तो सतर्कता यह रखने की आवश्यकता है कि हम स्वयं अच्छे स्वयंसेवक रहेंगे तभी जन-संगठनों में हम अपनी ideology का प्रभाव निर्माण कर सकेंगे। अब अच्छा स्वयंसेवक बनने के लिए, दिन-प्रतिदिन शाखा की उपस्थिति अपरिहार्य है, अनिवार्य है। कई लोगों के अन्दर यह excuse देने की एक प्रवृत्ति आ जाती है। कहते हैं कि देखिए

आपको पता ही नहीं। यह जो हमारा मजदूर क्षेत्र है, मैं भी कह सकता हूँ कि आपको क्या पता है, आप तो केवल दक्ष-आरम् कर रहे हैं, दुनियां कहाँ जा रही है, आपको मालूम ही नहीं। हमको तो रात-रात भर बैठकर सारे हिन्दुस्थान के मजदूरों की फिक्र करनी पड़ती है, हम कैसे प्रभात शाखा में आ सकते हैं ? पूरे देश की फिक्र करेंगे, या तुम्हारी शाखा की फिक्र करेंगे ? ऐसा मैं कह सकता हूं। कहना तो आसान है। लेकिन मैं भूल जाता हूं कि क्या मैं अकेला काम करने वाला हूं ? जो किसी जन-सगठन में नहीं हो, केवल अपनी दूकान चलाना ही उसका काम है तब उसको रात में जागरण नहीं करना पड़ता ? दूकान के बारे में सोचना नहीं पड़ता ? कौन सा माल मंगवाना है, कहाँ से credit लेना है, किस Bank के पास पहुँचना है, अपने ग्राहक कैसे बढ़ा सकते हैं, advertisement देना या न देना, उसको अपने कारोबार के बारे में सोचना नहीं पड़ता ? उसको जागरण नहीं होता ? जो भी आदमी काम छोटा हो या बड़ा, रहे हरेक आदमी यदि काम ईमानदारी से करेगा तो amount of work समान होता है। चाहे Private life में हो Public life में हो, जो आदमी ईमानदारी से काम करेगा, उसका amount of work समान होता है। Type of work, different होगा, quality of work different होगी; amount of work की दृष्टि से देखा जाय तो कोई छोटा नहीं है, कोई बड़ा नहीं। सब समान हैं। High school में हमारी एक कविता थी 'The mountain and the Squarrel' जिसमें वह पहाड़, squarrel से कहता है कि

"अरे तुम तो छोटी हो, देखो हम पहाड़ कैसे कितने बड़े हैं"। तो वह कहती है "ठीक है तुम तो बहुत बड़े हो और मैं छोटी हूँ" लेकिन वह कहती है कि—

Everything is well and wisely put
Talents differ.
If I can't grow a forest at my back
Neither can you crack a nut.

यह ठीक है कि तुम्हारे समान मैं, मेरी पीठ पर जंगल नहीं उगा सकती लेकिन मेरे समान तुम सुपारी भी फोड़ नहीं सकते। यह मेरी अपनी विशेषता है, तुम्हारी अपनी। दोनों समान हैं। जो amount of work की दृष्टि से देखा जाय तो सब समान है। छोटा दुकानदार भी उतना ही काम करता है और बड़ा सेठ साहुकार भी उतना ही काम करता है। छोटा हमारा गटनायक भी २४ घंटा काम करता है और सबसे श्रेष्ठ अधिकारी भी २४ घंटा काम करते हैं। amount of work सबका समान है, यदि sincerity समान है तो आंतरिकता समान है तो type of work में difference हो सकता है। तो हम जन-संगठनों में हैं इसलिए उनको यह कहना कि साहब हमारी तो बहुत बड़ी जिम्मेदारी है आपको पता ही नहीं है। अरे भाई उनको भारतीय मजदूर संघ के काम का पता नहीं तुमको दुकानदारी का पता नहीं। उनको union चलाने को दिया तो वह union चला नहीं सकते और तुमको दूकान चलाने के लिये बताया तो तुम दूकान खतम कर दोगे। अलग-अलग आदमी का अलग-अलग काम हो सकता है। लेकिन यह

...गीरी करते हुये, हम स्वयं अपने को फंसाने की कोशिश न करें, धोखा देने की कोशिश न करें। ... प्रतिदिन संघ- ... पर जाना है, यह आग्रह हमें रखना चाहिए। आग्रह ... तो होगा नहीं। Excuses ... की ~~बातें तो हो~~ सकती ... ~~Excuses की आ सकती~~ है किन्तु इससे काम का नाश होगा। ... एक बात। दूसरी भी समझना चाहिए। ~~क्योंकि अपना यह~~ ... संघ, एक परिवार के रूप में है। ऐसा लगता है कि हम ... कर रहे हैं सम्पर्क भी बढ़ रहा है तो जरा हमें सहायता ... के लिये संघ की ओर से यहाँ और ज्यादा स्वयंसेवक ~~इसमें~~ ~~intersted होवें~~ चाहिए। यह बात तो अच्छी है लेकिन काम करते समय हमारी यह भी दृष्टि होनी चाहिए कि यह Two way traffic हो, one way traffic नहीं कि ~~यहां~~ से तो ~~आदमी~~ ~~invest~~ हो रहे हैं लेकिन वहाँ से फिर से कोई वापस आ नहीं ... जाने। investment मिलना चाहिए, waste नहीं होना चाहिए। जितना investment होगा, उस मात्रा में divident भी parent organistion को मिलना चाहिए, ~~यह भी एक विचार है~~ ~~... चाहिए यह~~ two way traffic होना चाहिए। केवल लेना ही ... है देने की बात नहीं इस तरह का विचार नहीं होना चाहिए। ... ~~भी एक~~ सतर्कता रखने की आवश्यकता है ताकि ... balances रहें। ~~लेकिन~~ balances तभी ख्याल में रह ... हैं जब आदमी स्वयं अपने को संभालता है। ~~तो यह सम्पर्क~~ ~~... है कि नहीं, जन-संगठन है, लेकिन संपर्क~~ के माध्यम ~~... इसका उपयोग बराबर होगा या नहीं होगा~~ यह इस बात

पर अवलंबित है कि वहाँ काम करने वाले हमारे स्वयंसेवकों की मनोवृत्ति क्या है ? इस पर अवलंबित है। और मनोवृत्ति दोनों तरह की हो सकती है। हमारी ठीक मनोवृत्ति रही तो हर (mass organisation) का उपयोग संघ के लिए सम्पर्क का क्षेत्र बढ़ाने में हम कर सकते हैं। और हमारी मनोवृत्ति ठीक न रही तो शायद हमारा अन्य क्षेत्रों मे काम करना संघ के लिए (huge liability) के रूप में भी हो सकता है। दोनों हो सकते हैं। तो यह हमारी मनोवृत्ति पर अवलंबित हैं। दो उदाहरण मेरे स्मरण में हमेशा इस विषय में आते हैं। सम्पर्क का माध्यम इस नाते से हमें विभिन्न क्षेत्रों में जो हैं, संगठित सामूहिक प्रयास कर रहे हैं उन्हीं का एक दृश्य स्वरूप यानी जन संगठन भी कई क्षेत्रों में खड़े हुए लेकिन वहाँ काम करने वाले हमारे स्वयंसेवक बंधुओं की मनोवृत्ति कैसी रह सकती है दोनों उदाहरण मेरे सामने हैं। एक तो मैंने बचपन में पिक्चर देखी थी, वह कहानी भी है। सब लोग जानते हैं सिनेमा का नाम था माया मछिन्दर। आपने कहानी भी सुनी है। ज्यादा बताने की आवश्यकता नहीं। मछिन्दर नाथ जी शंकर जी के शिष्य और गोरखनाथ जी के गुरू थे। भिक्षा मांगते-२ स्त्री राज्य में चले गये। रानी के यहाँ भिक्षा मांगने गये तो रानी ने कहा आप यहीं ठहरो। क्योंकि वह जरा उनका रूप वगैरह देखकर आसक्त हो गई। कहा कि तुम यहीं ठहरो। मछिन्दर नाथ ने कहा नहीं, यह स्त्री राज्य है। मैं योगीराज हूँ। मै यहाँ नहीं ठहरुँगा। वह चालाक थी कहा कि अच्छा तुम डरते हो। तुमको खुद के ऊपर भरोसा नहीं तुमको लगता है कि तुम इन लोगों के साथ रहोगे, स्त्रियों के साथ रहोगे तो तुम्हारा अधःपतन होगा, स्खलन होगा। उन्होंने कहा नहीं,

नहीं मुझे को अपने ऊपर पूरा भरोसा है। मैं तो योगियों का राजा हूँ। मेरा क्या स्खलन हो सकता है। तो रानी ने कहा फिर ठहरो यहाँ। बोले अच्छा मैं ठहरता हूँ। आह्वान को स्वीकार किया। लेकिन कहते हैं ठहरने के बाद धीरे २ वहाँ जो amenities थी facilities थी previliges थे उसके शिकार धीरे -२ हो गये। ऐसा होता है। आदमी कहता है कि मै बहुत ध्येय निष्ठ हूँ, आदर्शवादी हूं मेरे ऊपर क्या बुरा असर होता है ? लेकिन धीरे २ होता है। एक प्रमाणिक कार्यकर्त्ता C.P.M. के श्री/ए के गोपालन जिनकी अभी हाल में मृत्यु हुई है उन्होंने आत्मचरित्र में बड़ा अच्छा विवरण दिया है। उन्होंने उसमें लिखा है कि हम तो पार्लियामेन्ट में इसलिए गये थे कि अपने क्रांति के लिए एक फोरम के नाते हम पार्लियामेन्ट का उपयोग करेंगे लेकिन वहाँ जो गये तो फिर बड़ा बंगला मिल गया या अच्छा फ्लैट मिल गया। फ्लैश लैटरिन में जाने की आदत लग गई। मिनिस्टरों के साथ खाना खाने की आदत लग गई। Prime Minister के साथ Shake Hand करना भी हमारे लिए संभव हो गया, धीरे २ लोग हमारे बंगले में आने लगे। हम बड़े लोगों के बंगले में जाने लगे। फिर केरल में जो बेचारे गंदे बीड़ी मजदूर थे उनके साथ Shake Hand करना जरा मुश्किल होने लगा। उनके गले में हाथ डालना जरा कठिन होने लगा लगने लगा कि काहे के लिए केरल में तथा गंदी बस्तियों में जाना चाहिए। अब साफ सुथरी बस्तियों में हम रहेंगे वहीं हमारे लिए अच्छा है। जो कार्यकर्त्ताओं से हमारा संबंध भी धीरे २ कटने लगा और हम दिल्ली में ही खुश रहने लगे। ऐसा उन्होंने वर्णन दिया है।

तो यह पु० के० गोपालन का भी हो सकता है, मछिन्दर नाथ का भी हो सकता है। एक आध्यात्मिक वायुमंडल में रानी के साथ रहना असम्भव नहीं हो सकता यह कहते कहते धीरे धीरे दिमाग होता है। (flush laterine mentality) आ जाती है। वे कहते हैं कि मछिन्दर नाथ का भोग परिणाम हुआ और वह भोग करने की इच्छा ही नहीं करते थे। अब गोरख नाथ बेचारे बड़ी चिन्ता में थे कि हमारे गुरू महाराज गये कहाँ। खोज करते करते वह शहर में आये। लोगों को पूछा कि यह कौन साधू महाराज हैं, तो लोगों ने जवाब दिया कि अरे यह काहे का सन्यासी, यह तो ढोंगी है, साहब ढोंगी है। वह रानी के साथ रहता है। सबसे विलास (वह) कर रहा है। तो गोरखनाथ को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने सोचा कि जायेंगे, मुलाकात करेंगे। लोगों ने कहा कि मुलाकात नहीं कर सकते। वहाँ तो भार restriction है। आप directly नहीं आ सकेंगे।" शिष्य के नाते फिर क्या करना तो भिखारी के रूप में गोरखनाथ और उनके दो साथी वे वहाँ पहुंचे। जहाँ मछिन्दर नाथ के बगीचे में वह रानी झूल रहे थे। रानी और मछिन्दरनाथ जहाँ वह भिखारी पहुँचे और उन्होंने अपना ढोलक बजाना शुरू किया। अब वह योगी पुरुष थे न इसलिए ऐसा (वहाँ) चमत्कार हुआ कि रानी भी वहां थी मछिन्दर नाथ भी वहां थे लेकिन वह जो ढोलक बज रहा था उसमें रानी को तो आवाज सुनाई देती थी, बोल सुनाई देते थे कि—डुम डुम डुम डुम। वही सुनाई देता था जैसे ढोलक के बोल होते हैं। तो रानी को केवल डुम डुम सुनती थी लेकिन मछिन्दर नाथ को उसमें वो बोल सुनाई देते

... मछिन्दर गायब आया, चलो मछिन्दर गोरख आया। ... मछिन्दर नाथ को सुनाई देते थे। उन्होंने भिखारियों की ... उनका ढोलक देखा। मछिन्दर नाथ ने यह बोल सुने- ... मछिन्दर गोरख आगये तो घबड़ा गये। सोचा मेरा नटनायक ... छोड़ने को भी तैयार नहीं। मैं तो सबको छोड़कर यहाँ ... आया था लेकिन मेरा पीछा करता हुआ मेरा नटनायक यहाँ ... पहुँच गया है। और फिर कहते हैं कि वे रात के समय भाग गये। ... आने का कोई सम्पर्क नहीं। लेकिन मैं अच्छा हूं। मैं अच्छा ... हूँ। क्या मेरा स्खलन हो सकता है? ऐसे कहते-कहते ... मछिन्दर हो सकता है। हम स्वयं अपने बारे में सतर्क नहीं ... तो ऐसा हो सकता है। लेकिन सतर्क रहे तो दूसरा भी हो ... है। आदर्श व्यवहार हमारा हो सकता है। उसका भी ... उदाहरण हमारे यहाँ आता है। देवासुर संग्राम चल रहा था। देवासुर संग्राम में संजी[illegible] जो विद्या थी वह असुरों के गुरु ...चार्य के पास थी और उनसे यह विद्या सीखने के लिये ... को भेजा जाय यह देवताओं ने सोचा तो बृहस्पति के ... कचदेव उनको वहाँ भेजा और फिर वहाँ उन्होंने रहते हुये वह विद्या सीखी। विद्या सीखकर वापिस आने के लिये निकले तो इतने दिन जो विद्या सीखने के लिये शुक्राचार्य के पास रहे थे उस ... गुणवत्ता के कारण सौंदर्य के कारण शुक्राचार्य की लड़की देवयानी उन पर आसक्त हो गई और जब वह आने के लिये निकले ... उसको दुःख हुआ और उनका आंचल उसने पकड़ लिया और ... कि नहीं मैं ऐसे तुमको जाने नहीं दूंगी। मेरे साथ विवाह

करना होगा और हम दोनों मिलकर ही जायेंगे। मैं अकेले नहीं जाने दूंगी।" अब आज इसका विचार कैसे होगा कहना कठिन है क्योंकि आज भी लोग अमरीका में इंगलैंड में सीखने के लिए जाते हैं और डाक्टरेट प्राप्त होता है या नहीं पता नहीं, लेकिन देवयानी को लेकर वापिस आते हैं। विद्या तो शायद आती नहीं लेकिन देवयानी आ जाती है। लेकिन इतने modern progressive कचदेव नहीं थे। वे ध्येयनिष्ठ थे। आदर्शवादी थे। एकाग्रचित्त से ध्येय की साधना करने वाले थे इसलिए उन्होंने विद्या तो प्राप्त कर ली किन्तु सौंदर्यशाली देवयानी को कहा कि 'नहीं तुम मेरी भगिनी हो' क्योंकि इनको जो programme दिया था उसमें विद्या प्राप्त करना ही इनके Agenda पर विषय था, देवयानी के साथ प्यार करना यह विषय उनके Agenda पर नहीं लिया था। इसलिए उन्होंने कहा कि 'मैं तो विद्या प्राप्ति के लिये आया हूँ। विद्या प्राप्त करके जा रहा हूं। मैं विवाह वगैरा नहीं करूँगा; तुम मेरी गुरुभगिनी हो,' यह कहते हुए वैसे गये वैसे ही वापस आये।

अब दोनो ही मनोवृतियां हो सकती हैं। हमारा कार्यकर्ता विभिन्न जनसंगठनों मे काम करने वाला माया मछिन्दर भी बन सकता है, कचदेव के समान भी हो सकता है। यह तो उसके ऊपर है। ऊपर से पानी डालने से गंगा नहीं बन सकती है, यह तो स्वयं अपने को ठीक रखने से ही यह ऐसा काम हो सकता है। तो यह यदि हमने किया जहां-२ जनसंगठन है वहां यदि हमने काम किया और अपने को स्वयंसेवक के नाते अच्छा रखा तो फिर संपर्क के माध्यम के रूप मे अनेक माध्यमों मे से एक माध्यम हमने

जन संगठन (Mass organisation) इसका पूरा उपयोग संघ कार्य के विस्तार के लिए हो सकता है। अब इस तरह से अपने कार्य की कुल रचना है। वह रचना ध्यान में रख कर हम काम करेंगे तो शास्त्रीय ढंग से काम होगा और यह रचना क्या है तो संक्षेप में मैं दोहराऊँगा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का अपना एक ध्येय है। उसका विवरण यहां देने की आवश्यकता नहीं इस ध्येय की सिद्धि के लिए विशेष कार्य पद्धति का निर्माण विकास संघ ने किया है। यह संघ की विशेषता रही है।

यह कार्यपद्धति स्वयंपूर्ण है दोनों अर्थों में कि यदि इस कार्य पद्धति को लेकर चलते हैं तो संघ का ध्येय सिद्ध करने के लिए दूसरी किसी भी पूरक कार्य पद्धति की आवश्यकता नहीं है और किसी भी मोह के कारण यदि हम इस कार्यपद्धति को छोड़ देते हैं तो कोई भी दूसरी ऐसी वैकल्पिक (substitute alternative) कार्यपद्धति नहीं जो हमें वहां पहुंचायेगी जहां हमें संघ पहुंचाना चाहता है। दोनों अर्थ में संघ की कार्यपद्धति स्वयंपूर्ण है। और संघ का यह जो विस्तार है इसका माध्यम कुछ होगा वह संपर्क है। व्यक्तिगत जीवन में जहाँ २ हमारा जिसके साथ संबंध आता है वहाँ-२ संघ को दृष्टि में रखते हुए हम व्यवहार करेंगे तो २४ घंटा हम संघ को बढ़ाने का काम प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कर सकते हैं। इस दृष्टि से संघ हमारे हर एक स्वयंसेवक के दृष्टि में आ जाय यह बहुत आवश्यक बात है। संघ दृष्टि में आयेगा तो जहाँ कहीं हम जीवन में काम करते हैं वहाँ हमारे सम्पर्क में आने वाले हर एक व्यक्ति के विषय में हम potential स्वयंसेवक के नाते सोचेंगे और उसके साथ व्यवहार

करेंगे जिसके कारण संघ का कार्य बढ़ सकता है। लेकिन इस तरह से जहाँ संम्पर्क हम जगह २ बढ़ा रहें हैं वहाँ यदि किसी कार्यक्षेत्र में ज्यादा संख्या में स्वयंसेवक हैं, सारे जागरुक हैं उसी एक क्षेत्र में अपना संम्पर्क का कार्य वह कर रहें हैं तो विभिन्न लोगों के जो अलग २ प्रयास है उसमें एक सूत्रता (Co ordination) आनी चाहिए।इस दृष्टि से सम्पर्क के प्रयास को संगठित करने से जिसका विस्तृत परिणाम इस भांति जनसंगठन दिखाई देता है। ऐसी यदि परिस्थिति रही तो ऐसे जनसंगठनों में काम करने वाले हमारे स्वयंसेवकों को अपनी मूल भूमिका को कचदेव के समान [illegible] ख्याल में रखते हुए काम करना चाहिए और यह (Two way traffic) चलना चाहिए। ऐसा यदि हम अपनी जिम्मेवारी का निर्वाह करेंगे तो कुल मिलाकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जो कार्यपद्धति है उसको सफलता से हम निभा सकेंगे। यह ख्याल में रखते हुए प्रतिदिन का अपना हमारा व्यवहार रहें। इतना ही कहने का समय पर्याप्त होगा।

❀

भारतीय संस्कृति के पूजारी, कर्मयोगो, श्रेष्ठ विचारक, अनेक ग्रन्थों के प्रणेता, बहुभाषाविद् सुवक्ता, मिलनसार एवं कानून स्नातक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी का जन्म सन् १९२० में महाराष्ट्र के वर्धा जिला के आर्वि ग्राम में हुआ। बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक श्री ठेंगड़ी सन् १९४१ से १९४९ तक केरल, बंगाल, आसाम, मद्रास आदि प्रांतों में संघ के प्रचारक के नाते कार्य करते रहें हैं। १९४९ से ही आप श्रमिक आंदोलनों के साथ जुड़े हुए हैं। अनेक वर्षों तक भारतीय मजदूर संघ के महामंत्री रहे हैं। श्री दत्तोपंत जी १९६४ से दो बार राज्यसभा के सदस्य रह चुके हैं।

सम्प्रति २४ जूलाई '७८ को कलकत्ते के नोकरी-पेशा करने वाले स्वयंसेवकों के समक्ष दिया गया भाषण यहाँ अविकल रूप से प्रस्तूत है।